Golden®

NEW
NCERT Based
Study Material

संस्कृत शारदा

A Book With a Difference

Based on New शारदा Textbook and CBSE Guidelines

Key Features

- रोचक Mind Map
- पाठ का सार
- मूलपाठः, शब्दार्थाः, अन्वयः, सरलार्थः भावार्थः च
- शारदाः अभ्यासाद् जायते सिद्धिः
- अतिरिक्त-अभ्यासः पठितावबोधनम्
- अपठितावबोधनम्
- रचनात्मककार्यम्
- अनुप्रयुक्तव्याकरणम्

Includes Audio Summary

Scan the QR Code for Regional Languages

वस्तुनिष्ठ प्रश्नोत्तराणि
- निर्देशानुसारम् उत्तरत
- मेलनं कुरुत
- रिक्तस्थानानि पूरयत
- शुद्धम्/अशुद्धं

COLOURED EDITION

NEW AGE

कक्षा IX

Click Here for Regional Languages

Golden®

संस्कृत शारदा

कक्षा 9

Based on New शारदा Textbook and CBSE Guidelines

- पठितावबोधनम्
- अपठितावबोधनम्
- रचनात्मककार्यम्
- अनुप्रयुक्तव्याकरणम्

लेखिका

योगिता कपूरिया

एम.ए. संस्कृत

मुख्य विशेषताएँ—

* परीक्षा में पूछे गए प्रश्नों के उत्तर
* परीक्षोपयोगी सभी प्रकार के प्रश्नोत्तर
* भाषा सरल, सजीव एवं सरस

Committed to Educate the Nation

NEW AGE

Publishing Globally

IN INDIA

NEW AGE INTERNATIONAL (P) LIMITED, PUBLISHERS

LONDON • NEW DELHI

Bengaluru • Chennai • Cochin • Guwahati

Hyderabad • Kolkata • Mumbai

Visit us at www.newagegolden.com

Click Here to Buy Main Book Online

Copyright © New Age International (P) Ltd., Publishers
Published by New Age International (P) Ltd., Publishers
New Edition

Golden logo in English & Hindi is registered with Govt. of India, copyright office with Registration No. A-78534/2007 & A-78533/2007 in name of New Age International (P) Ltd., Publishers.

Rights are reserved. This logo may not be reproduced in any form, without the written permission of the copyright owner. Or else it should be an infringement of copyright which should be a criminal offence.

No part of this book may be reproduced in any form, by photostat, microfilm, xerography, or any other means, or incorporated into any information retrieval system, electronic or mechanical, without the written permission of the publisher.

GLOBAL OFFICES

• New Delhi **NEW AGE INTERNATIONAL (P) LIMITED, PUBLISHERS**
7/30 A, Daryaganj, New Delhi-110002, (INDIA), **Tel.:** (011) 23253472, 23253771, **Mob.:** 9315905300
E-mail: contactus@newagepublishers.com • Visit us at www.newagepublishers.com

• London **NEW AGE INTERNATIONAL (UK) LTD.**
27 Old Gloucester Street, London, WC1N 3AX, UK
E-mail: info@newacademicscience.co.uk • Visit us at www.newacademicscience.co.uk

BRANCHES

• Bengaluru 167, 1st Floor, 11th Cross, Mulkatamma Temple Road,Near Rajiv Gandhi Sports Complex, Vittal Nagar
Bengaluru – 560026, **Tel.:** (080) 26756823, **Mob.:** 9315905288, **E-mail: bangalore@newagepublishers.com**

• Chennai 26, Damodaran Street, T. Nagar, Chennai-600 017, **Tel.:** (044) 24353401, **Mob.:**9315905309
E-mail: chennai@newagepublishers.com

• Cochin CC-39/1016, Carrier Station Road, Ernakulam South, Cochin-682 016
Tel.: (0484) 4051304, **Mob.:** 9315905289, **E-mail: cochin@newagepublishers.com**

• Guwahati Hemsen Complex, Mohd. Shah Road, Paltan Bazar, Near Starline Hotel
Guwahati-781 008, **Tel.:** (0361) 2513881, **Mob.:** 9315905296, **E-mail: guwahati@newagepublishers.com**

• Hyderabad 105, 1st Floor, Madhiray Kaveri Tower, 3-2-19, Azam Jahi Road, Near Kumar Theater
Nimboliadda Kachiguda, Hyderabad-500 027, **Tel.:** (040) 24652456, **Mob.:** 9315905326
E-mail: hyderabad@newagepublishers.com

• Kolkata RDB Chambers (Formerly Lotus Cinema) 106A, 1st Floor, S N Banerjee Road
Kolkata-700 014, **Tel.:** (033) 22273773, **Mob.:** 9315905319, **E-mail: kolkata@newagepublishers.com**

• Mumbai 142C, Victor House, Ground Floor, N.M. Joshi Marg, Lower Parel, Mumbai-400 013
Tel.: (022) 24927869, 24915415, **Mob.:** 9315905282, **E-mail: mumbai@newagepublishers.com**

• New Delhi 22, Golden House, Daryaganj, New Delhi-110 002, **Tel.:** (011) 23262368, 23262370
Mob.: 9315905300, **E-mail: sales@newagepublishers.com**

C-26-05-15462

Printed in India at Ajit Printing Press, Delhi.
Typeset at In-house, Delhi.

NEW AGE INTERNATIONAL (P) LIMITED, PUBLISHERS
7/30 A, Daryaganj, New Delhi-110002
Visit us at **www.newagegolden.com**
(CIN: U74899DL1966PTC004618)

प्राक्कथनम्

नवीनतम पाठ्यक्रम को ध्यान में रखते हुए '**Golden® संस्कृत**' का नया संस्करण **नवम कक्षा** के परीक्षार्थियों की सेवा में प्रस्तुत है।

प्रस्तुत पुस्तक की सामग्री को पाठ्यक्रम के अनुसार निम्नलिखित चार खण्डों में बाँटा गया है–

(क) अपठितावबोधनम्–इस खण्ड में 80-100 शब्दों के सरल गद्यांश को लेकर एकपद के द्वारा, पूर्णवाक्य के द्वारा प्रश्नोत्तर, भाषिक कार्य (बहुविकल्पात्मक) तथा समुचित शीर्षक सहित सम्मिलित किया गया है।

(ख) रचनात्मककार्यम्–यह खण्ड शारदा पाठ्यपुस्तक पर आधारित है। इसे पाँच अभ्यासों में बाँटा गया है। पहले अभ्यास में सङ्केत-आधारित पत्रलेखन से सम्बन्धित सामग्री है। दूसरे अभ्यास में चित्रवर्णन, तीसरे अभ्यास में अनुच्छेदलेखनम्, चौथे अभ्यास में संवादपूर्तिः एवं पांचवाँ कथापूर्तिः से संबंधित सामग्री है।

☞ पाठ्यक्रम में औपचारिक एवं अनौपचारिक दोनों तरह के पत्र हैं अतः औपचारिक अथवा अनौपचारिक में से कोई एक पत्र पूछा जाएगा। अतः गोल्डन संस्कृत में दोनों प्रकार के पत्र दिए गए हैं।

(ग) अनुप्रयुक्तव्याकरणम्–पाठ्यक्रम में परिवर्तन होने से कुछ नवीन सामग्री को सम्मिलित किया गया है। प्रत्येक विषयवस्तु को वैयाकरणिक दृष्टि से सविस्तार समझाते हुए अभ्यास हेतु अभ्यास कार्य भी उपलब्ध हैं। पूर्वपरीक्षाणां प्रश्नाः एवं महत्त्वपूर्ण परीक्षोपयोगी प्रश्न के अतिरिक्त इसमें तीन अभ्यास प्रश्न-पत्र भी सम्मिलित किए गए हैं। प्रत्येक पाठ में बहुविकल्पीय प्रश्न समावेशित हैं।

(घ) पठितावबोधनम्–इस खण्ड के अन्तर्गत 'शारदा' पाठ्यपुस्तक के सभी पाठों के शब्दार्थ, अनुवाद एवं अभ्यास-प्रश्नोत्तर के अतिरिक्त प्रश्नपत्र के क्रम से गद्यांश, पद्यांश, नाट्यांश को लेकर अवबोधन-कार्य तथा भाषिक-कार्य, अन्वय, भावार्थ, प्रश्ननिर्माण, घटनाक्रम, सन्दर्भगत शब्दों के संस्कृत वाक्यों में प्रयोग एवं शब्दार्थ-मेलनम् की सामग्री को विस्तार से, प्रत्येक प्रश्न की अनेक विधाओं के साथ, उत्तर सहित समाविष्ट किया गया है।

परीक्षार्थियों के लिए ध्यान देने योग्य बातें–

(क) सभी प्रश्न संस्कृत में हैं तथा उत्तर भी संस्कृत में देने हैं। अतः प्रश्न को दो-तीन बार पढ़कर अच्छी तरह समझ लेना आवश्यक है। उत्तर लिखने के बाद भी उत्तर की इस दृष्टि से जाँच-पड़ताल कर लेनी चाहिए कि कहीं कोई विसर्ग, अनुस्वार आदि की अथवा व्याकरण सम्बन्धी कोई अन्य त्रुटि तो नहीं रह गई है।

(ख) उत्तर देने की जो शैली इस पुस्तक में बताई गई है, उसी शैली में उत्तर देना चाहिए।

(ग) जहाँ एक पद में उत्तर देने के लिए निर्देश दिया गया है, वहाँ एक पद में ही उत्तर दें तथा जहाँ एक वाक्य में उत्तर देने का निर्देश है, वहाँ एक वाक्य में उत्तर दें।

आशा है कि छात्र सम्यक् ज्ञान प्राप्त कर लाभान्वित होंगे। यही हमारा प्रयास एवं शुभकामना है।

–लेखिका
योगिता कपूरिया

विषय-सूची

- प्राक्कथनम् (*v*)
- पाठ्यक्रम (*vii–xiii*)

'घ' खण्डः

शारदा

(*1–139*)

अध्याय		पृष्ठ
1.	सत्यं शिवं सुन्दरं संस्कृतम्	3
2.	सुखस्य मूलं धर्मः धर्मस्य मूलम् अर्थः	11
3.	आत्मवत्सर्वभूतेषु यः पश्यति सः पण्डितः	19
4.	न खलु वयस्तेजसो हेतुः	35
5.	एषा सा कृतकबुद्धिः मानवबुद्धेः सहकरी	49
6.	मनःपूतं समाचरेत्	63
7.	उपायं चिन्तयेत् प्राज्ञस्तथापायं च चिन्तयेत्	73
8.	अन्नाद् आनन्दं प्रति	85
9.	कृतं प्रतिकृतं भूयादेष धर्मः सनातनः	99
10.	णमो अरिहन्ताणम्	113
11.	वर्णोच्चारण-शिक्षा २	127

Click Here to Buy Main Book Online

'क' खण्डः

अपठितावबोधनम्

(*141-154*)

1. अपठितावबोधनम् 142

'ख' खण्डः

रचनात्मककार्यम्

(*155-187*)

2. पत्रलेखनम् 156

3. चित्रवर्णनम्/अनुच्छेदलेखनम् 165

4. संवादपूर्तिः/कथापूर्तिः 178

'ग' खण्डः

अनुप्रयुक्तव्याकरणम्

(*189-257*)

5. सन्धयः 190

6. कारक-उपपदविभक्तयः 201

7. शब्दरूपाणि 211

8. धातुरूपाणि 219

9. प्रत्यया: 230

10. समासः 240

11. संख्यावाचकाः 246

12. उच्चारणस्थानानि 250

13. अव्ययानि 254

सैंपल पेपर्स

(*258-274*)

- Golden® अभ्यास प्रश्न-पत्र-1 259
- Golden® अभ्यास प्रश्न-पत्र-2 264
- Golden® अभ्यास प्रश्न-पत्र-3 269

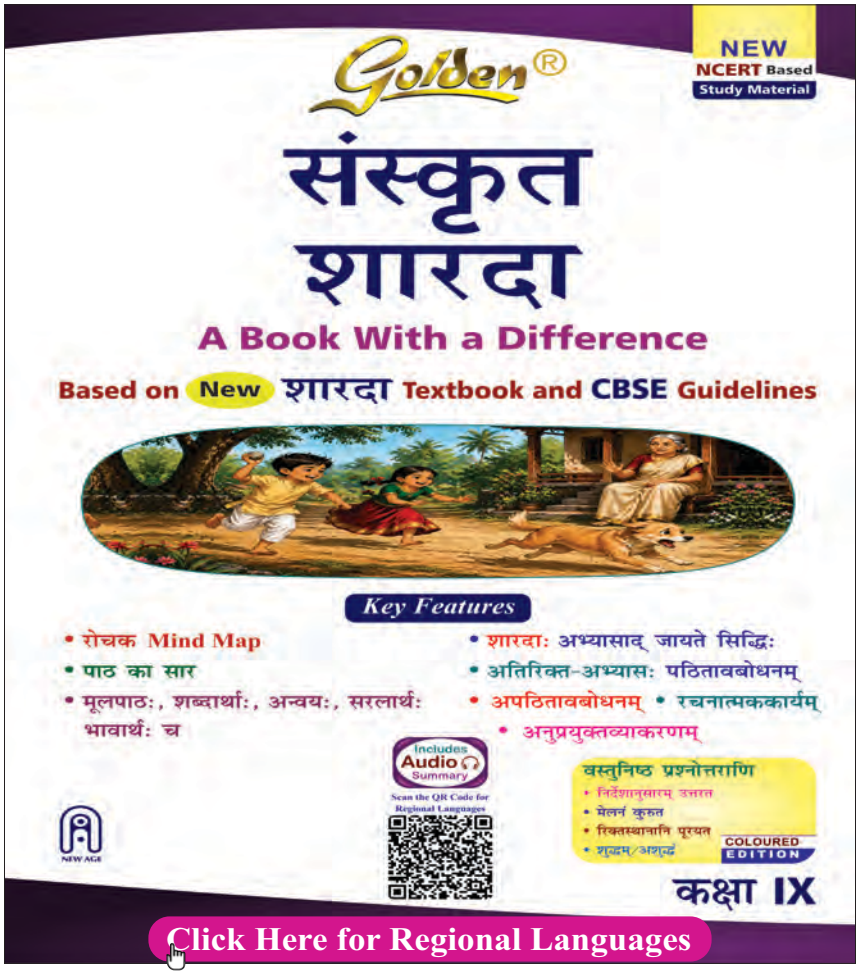

ISBN: 978-93-6074-593-6 | Publication Year: 2027 | Edition: New
Pages: 500 | MRP: ₹ 475.00 | Paperback

Click Here to Buy the Book Online

Salient Features

- रोचक Mind Map
- पाठ का सार
- मूलपाठः, शब्दार्थाः, अन्वयः, सरलार्थः भावार्थः च
- शारदाः अभ्यासाद् जायते सिद्धिः
- अतिरिक्त-अभ्यासः पठितावबोधनम्
- अपठितावबोधनम् • रचनात्मककार्यम्
- अनुप्रयुक्तव्याकरणम्

वस्तुनिष्ठ प्रश्नोत्तराणि

• निर्देशानुसारम् उत्तरत • मेलनं कुरुत • रिक्तस्थानानि पूरयत • शुद्धम्/अशुद्धं

Watch me on YouTube

Committed to Educate the Nation
NEW AGE
Publishing Globally
IN INDIA

NEW AGE INTERNATIONAL (P) LIMITED, PUBLISHERS
LONDON • NEW DELHI
New Delhi • Bengaluru • Bhopal • Chennai • Cochin • Guwahati • Hyderabad • Kolkata • Lucknow • Mumbai • Patna
9315905300 9315905288 9315905334 9315905309 9315905289 9315905296 9315905326 9315905319 9315905295 9315905282 9315905339
Visit us at www.newagegolden.com

परिचय

- भारत की सम्पदा
- ज्ञान और वैभव संचित
- मनुष्य को सुसंस्कृत बनाता है
- भारतीय भाषाओं के अध्ययन हेतु अपेक्षित

सत्यं शिवं सुन्दरं संस्कृतम्

श्लोक 1

- भारतीय एकता का साधन
- भारतीयता का संपादक
- ज्ञान पुंज का प्रदर्शक
- सभी आनंद का समूह

श्लोक 2

- मस्तिष्कों का संस्कारक
- वाणियों का परिष्कारक
- सत्य मार्ग प्रेरणा
- सद्गुणों का संधायक

श्लोक 3

- विश्वबंधुत्व का विस्तार
- प्राणियों में एकता
- सभी ओर शांति
- पंचशील की प्रतिष्ठा

श्लोक 4

- त्याग, संतोष, सेवा का व्रत
- विश्व कल्याण के प्रति निष्ठा
- ज्ञान और विज्ञान का सम्मेलन
- भुक्ति और मुक्ति में सहायक

शिक्षा

इस पाठ से हमें यह शिक्षा मिलती है कि संस्कृत भाषा केवल एक प्राचीन भाषा नहीं, बल्कि भारत की अमूल्य धरोहर और ज्ञान का विशाल भंडार है। इसके अध्ययन से मनुष्य के विचार, वाणी और आचरण में शुद्धता आती है, जिससे वह सुसंस्कृत बनता है। संस्कृत हमें सही मार्ग पर चलने की प्रेरणा देती है और समाज में एकता, शांति तथा भाई-चारे की भावना को बढ़ाती है।

संस्कृत भाषा हमें त्याग, संतोष, सेवा और विश्व कल्याण जैसे महान मूल्यों को सिखाती है। साथ ही, यह भाषा धर्म, अर्थ, काम और मोक्ष की प्राप्ति का मार्ग भी दिखाती है। संस्कृत का ज्ञान हमें सत्य, शिव और सुंदर के आदर्शों की ओर प्रेरित करता है तथा हमारे पूर्वजों की महान परंपराओं से जोड़ता है। इसलिए हमें संस्कृत भाषा का अध्ययन कर उसके महत्व को समझना चाहिए और इसका प्रचार–प्रसार करना चाहिए।

प्रथमः पाठः

सत्यं शिवं सुन्दरं संस्कृतम्

(संस्कृत सत्य कल्याणकारी है, सुन्दर है)

पाठ का सार

संस्कृत भारत देश की सम्पदा है। इसमें भारतीय लोगों का ज्ञानवैभव संचित है। संस्कृत के अध्ययन से मनुष्य सुसंस्कृत होता है। भारतीय भाषाओं के सुचारु रूप से अध्ययन के लिए संस्कृत नितान्त अपेक्षित है। संस्कृत के अध्ययन से क्या-क्या सिद्ध होता है–इस विषय को लेकर सुन्दर गीत कवि ने प्रस्तुत किया है।

मूलपाठः, शब्दार्थाः, सरलार्थाः, अन्वयाः, भावार्थाः, अभ्यासकार्यं च

1. **भारतीयैकतासाधकं संस्कृतम्**
भारतीयत्वसम्पादकं संस्कृतम्
ज्ञानपुञ्जप्रभादर्शकं संस्कृतम्
सर्वदानन्दसन्दोहदं संस्कृतम्॥१॥ *(पृष्ठ 1)*

शब्दार्थाः–साधकम् – सिद्ध करने वाली। **सम्पादकम्** – सम्पादन करने वाली। **पुञ्ज** – समूह। **प्रभा** – आलोक। **दर्शकम्** – दिखाने वाली। **सन्दोह** – समूह। **दम्** – देने वाली।

अन्वयः– संस्कृतं भारतीयैकता-साधकम् (अस्ति)। संस्कृतं भारतीयत्व-सम्पादकम् (अस्ति)। संस्कृतं ज्ञानपुञ्जप्रभादर्शकम् (अस्ति)। संस्कृतं सर्वदानन्दसन्दोहदम् (अस्ति)।

सरलार्थः– संस्कृत भारतीय लोगों की एकता को सिद्ध करने वाली है। संस्कृत भारतीयता की सम्पादक है। संस्कृत ज्ञानपुञ्ज के आलोक को दिखलाने वाली है। संस्कृत सदा आनन्द के समूह को देने वाली है।

भावार्थः– संस्कृत हमारे लिए सभी प्रकार से कल्याणकारिणी है।

2. **सर्वमस्तिष्कसंस्कारकं संस्कृतम्**
सर्ववाणीपरिष्कारकं संस्कृतम्
सत्पथप्रेरणादायकं संस्कृतम्
सद्गुणग्रामसन्धायकं संस्कृतम्॥२॥ *(पृष्ठ 1)*

शब्दार्थाः–मस्तिष्क – बुद्धि। **संस्कारकम्** – संस्कार करने वाली। **परिष्कारकम्** – शुद्ध करने वाली। **सत्पथ** – सन्मार्ग। **ग्राम** – समूह। **सन्धायकम्** – सन्धान करने वाली।

अन्वयः– 'संस्कृतं सर्वमस्तिष्कसंस्कारकम् (अस्ति)। संस्कृतं सर्ववाणी-परिष्कारकम् (अस्ति)। संस्कृतं सत्पथप्रेरणादायकम् (अस्ति)। सस्कृतं सद्गुणग्राम सन्धायकम् (अस्ति)।'

सरलार्थः– संस्कृत सभी की बुद्धियों को संस्कारवान बनाने वाली है। संस्कृत सभी की वाणियों को शुद्ध करने वाली है। संस्कृत सन्मार्ग की प्रेरणा देने वाली है। संस्कृत सद्गुणों के समूह का मेल कराने वाली है।

भावार्थः– संस्कृत अनेक गुणों की खान है।

3. **विश्वबन्धुत्वविस्तारकं संस्कृतम्**
सर्वभूतैकताकारकं संस्कृतम्
सर्वतः शान्तिसंस्थापकं संस्कृतम्
पञ्चशीलप्रतिष्ठापकं संस्कृतम्॥३॥ *(पृष्ठ 1)*

शब्दार्थाः–विश्व – संसार। **बन्धुत्व** – भाईचारा। **विस्तारकम्** – विस्तार करने वाली। **सर्वतः** – सभी ओर से। **संस्थापकम्** – स्थित करने वाली। **प्रतिष्ठापकम्** – प्रतिष्ठित करने वाली। **भूत** – प्राणी।

अन्वयः– संस्कृतं विश्वबन्धुत्व विस्तारकम् (अस्ति)। संस्कृतं सर्वभूतैकताकारकम् (अस्ति)। संस्कृतं सर्वतः शान्ति संस्थापकम् (अस्ति)। संस्कृतं पञ्चशील-प्रतिष्ठापकम् (अस्ति)।

सरलार्थः– संस्कृत संसार के भाईचारा का विस्तार करने वाली है। संस्कृत सभी प्राणियों की एकता करने वाली है। संस्कृत सभी ओर से शान्ति की स्थापना करने वाली है। संस्कृत पञ्चशील (सिद्धान्त) को प्रतिष्ठित करने वाली (भाषा) है।

भावार्थः– संस्कृत विश्व की कल्याण करने वाली भाषा है।

Click Here for Regional Languages

4. **त्यागसन्तोषसेवाव्रतं संस्कृतम्**
विश्वकल्याणनिष्ठायुतं संस्कृतम्
ज्ञानविज्ञानसम्मेलनं संस्कृतम्
भुक्तिमुक्तिद्वयोद्वेलनं संस्कृतम्॥४॥ *(पृष्ठ 1)*

शब्दार्थाः–युतम् – युक्त। **भुक्ति** – भोग। **मुक्ति** – मोक्ष। **उद्वेलनम्** – उत्थान करने वाली। **द्वय** – दोनों।

अन्वयः– संस्कृतं त्यागसन्तोषसेवाव्रतम् (अस्ति)। संस्कृतं विश्वकल्याणनिष्ठायुतम् (अस्ति)। संस्कृतं ज्ञानविज्ञानसम्मेलनम् (अस्ति)। संस्कृतं भुक्तिमुक्तिद्वयोद्वेलनम् (अस्ति)।

सरलार्थः– संस्कृत त्याग, सन्तोष और सेवा के व्रत वाली है। संस्कृत विश्व के कल्याण की निष्ठा से युक्त है। संस्कृत ज्ञान व विज्ञान का सम्मेलन है। संस्कृत भोग व मोक्ष दोनों का उत्थान करने वाली है।

भावार्थः– संस्कृत भोग व मोक्ष को देने वाली है।

5. **धर्मकामार्थमोक्षप्रदं संस्कृतम्**
ऐहिकामुष्मिकोत्कर्षदं संस्कृतम्
कर्मदं ज्ञानदं भक्तिदं संस्कृतम्
सत्यनिष्ठं शिवं सुन्दरं संस्कृतम्॥५॥ *(पृष्ठ 2)*

शब्दार्थाः–प्रदम् – प्रदान करने वाली। **ऐहिक** – इस लोक का। **अमुष्मिक** – परलोक का। **उत्कर्षदम्** – उत्कर्ष देने वाली। **कर्मदम्** – कर्म को देने वाली। **सत्यनिष्ठ** – सत्य निष्ठा वाली। **शिवम्** – कल्याणकारिणी। **ज्ञानदम्** – ज्ञान देने वाली।

अन्वयः– संस्कृतं धर्मार्थकाममोक्षदम् (अस्ति)। संस्कृतं ऐहिकामुष्मिकोत्कर्षदं (अस्ति)। संस्कृतं कर्मदं ज्ञानदं भक्तिदम् (अस्ति)। संस्कृतं सत्यनिष्ठं शिवं सुन्दरम् (अस्ति)।

सरलार्थः– संस्कृत धर्म, अर्थ, काम और मोक्ष को देने वाली है। संस्कृत इस लोक और परलोक का उत्थान करने वाली है। संस्कृत कर्म को देने वाली, ज्ञान को देने वाली और भक्ति को देने वाली है। संस्कृत सत्यनिष्ठा वाली, कल्याणकारिणी तथा सुन्दर है।

भावार्थः– संस्कृत मनुष्य का इस लोक तथा परलोक दोनों में कल्याण करने वाली भाषा है।

6. **शब्दलालित्यलीलावनं संस्कृतम्**
चारुमाधुर्यधारागृहं संस्कृतम्
विश्वचेतश्चमत्कारकं संस्कृतम्
पूर्वजानां यशः स्मारकं संस्कृतम्॥६॥ *(पृष्ठ 2)*

शब्दार्थाः–चारु – सुन्दर। **माधुर्य** – मधुरता। **गृहम्** – घर। **चमत्कारकम्** – चमत्कार करने वाली। **चेतः** – मन। **स्मारकम्** – स्मरण कराने वाली।

अन्वयः– संस्कृतं शब्दलालित्यलीलावनम् (अस्ति)। संस्कृतं चारुमाधुर्यधारागृहम् (अस्ति)। संस्कृतं विश्वचेतश्चमत्कारकम् (अस्ति)। संस्कृतं पूर्वजानां यशः स्मारकम् (अस्ति)।

सरलार्थः– संस्कृत शब्दों के लालित्य की लीला का वन है। संस्कृत सुन्दर व मधुरता का आनन्ददायक गृह है। संस्कृत संसार के मानस को चमत्कृत करने वाली है। संस्कृत पूर्वजों की यशोराशि को स्मरण कराने वाली है।

भावार्थः– संस्कृत सभी प्रकार से एक सुन्दर भाषा है।

शारदा–अभ्यासाद् जायते सिद्धिः

(पृष्ठ 4-7)

१. एकपदेन उत्तरं लिखत–

यथा–ज्ञानपुञ्जप्रभादर्शकं किम्?
उत्तर– संस्कृतम्।

(क) संस्कृतं कस्याः साधकम्?
.....

(ख) सर्वदा संस्कृतं कस्य सन्दोहदम्?
.....

(ग) संस्कृतं कस्य प्रेरणादायकम्?
.....

(घ) संस्कृतं कासां परिष्कारकम्?
.....

(ङ) कस्य विस्तारकं संस्कृतम्?
.....

उत्तराणि– (क) भारतीयैकतायाः, (ख) आनन्दस्य, (ग) सत्पथस्य, (घ) सर्ववाणीनाम्, (ङ) विश्वबन्धुत्वस्य।

Click Here to Buy Main Book Online

२. अधोलिखितप्रश्नानाम् उत्तराणि पूर्णवाक्येन लिखत–

(क) सर्वतः कस्याः संस्थापकं संस्कृतम्?
.....

(ख) कीदृशं व्रतं संस्कृतम्?
.....

(ग) कयोः सम्मेलनं संस्कृतम्?
.....

(घ) संस्कृतं कस्य चमत्कारकम्?
.....

(ङ) केषां यशः स्मारकं संस्कृतम्?
.....

उत्तराणि– (क) सर्वतः संस्कृतं शान्तेः संस्थापकम् अस्ति।
(ख) संस्कृतं त्यागसन्तोषसेवाव्रतम् अस्ति।
(ग) संस्कृतं ज्ञानविज्ञानयोः सम्मेलनम् अस्ति।
(घ) संस्कृतं विश्वचेतसः चमत्कारकम् अस्ति।
(ङ) संस्कृतं पूर्वजानां यशसः स्मारकम् अस्ति।

३. रिक्तस्थानानि पूरयन्तु–

यथा– सर्वभूतैकता–कारकं संस्कृतम्।
(क) ..... सम्पादकं संस्कृतम्।
(ख) ..... दर्शकं संस्कृतम्।
(ग) ..... संस्कारकं संस्कृतम्।
(घ) कर्मदं ..... भक्तिदं संस्कृतम्।
(ङ) सत्यनिष्ठं ..... संस्कृतम्।
(च) शब्दलालित्य ..... संस्कृतम्।

उत्तराणि– (क) भारतीयत्व (ख) ज्ञानपुञ्जप्रभा
(ग) सर्वमस्तिष्क (घ) ज्ञानदं
(ङ) शिवं सुन्दरं (च) लीलावनं

४. मञ्जूषायाः पदानि उपयुज्य षड्वाक्यानि रचयत–

वाणीपरिष्कारिका, एकता, सर्वतः सेवा, सुन्दरम्, पूर्वजानाम्, सत्यथे प्रेरयितुम्, विश्वकल्याणाय, त्यागस्य, सन्तोषस्य, विश्वबन्धुत्वविस्तारकम्

यथा– वाणीपरिष्कारिका संस्कृत-भाषा भवति।
(क) .....
(ख) .....
(ग) .....
(घ) .....
(ङ) .....
(च) .....

उत्तराणि–
(क) सत्पथे प्रेरयितुं संस्कृतभाषा समर्था अस्ति।
(ख) विश्वबन्धुत्वस्य विस्तारिका संस्कृतभाषा अस्ति।
(ग) संस्कृतभाषा त्यागस्य सन्तोषस्य च भाषा अस्ति।
(घ) विश्वकल्याणस्य निष्ठायुता संस्कृतभाषा अस्ति।
(ङ) संस्कृतभाषा सर्वतः शान्तिसंस्थापिका अस्ति।
(च) संस्कृतभाषा सत्यानिष्ठा अस्ति।

५. अधोलिखितानां समस्तपदानाम् उदाहरणानुसारं विग्रहं कुरुत–

यथा– भारतीयैकतासाधकम् भारतीयैकतायाःसाधकम्।
(क) ज्ञानपुञ्जप्रभादर्शकम् .....
(ख) सर्ववाणीपरिष्कारकम् .....
(ग) विश्वबन्धुत्वविस्तारकम् .....
(घ) सर्वभूतैकताकारकम् .....
(ङ) शान्तिसंस्थापकम् .....
(च) ज्ञानविज्ञानसम्मेलनम् .....

उत्तराणि– (क) ज्ञानस्य पुञ्जः, तस्य प्रभादर्शकम्।
(ख) सर्ववाणीनां परिष्कारकम्।
(ग) विश्वबन्धुत्वस्य विस्तारकम्।
(घ) सर्वभूतैकतायायाः कारकम्।
(ङ) शान्तेः संस्थापकम्।
(च) ज्ञानाविज्ञानयोः सम्मेलनम्।

६. प्रदत्तमञ्जूषातः पर्यायपदानि चित्वा रिक्तस्थाने लिखत–

उल्लासः, किरणः, जगत्, अनुपमा, तेजोराशयः, मानम्

(क) विद्वांसः ..... भवन्ति।
(ख) सूर्यस्य ..... सर्वेषां प्राणिनां कृते हितकरः भवति।
(ग) ईश्वरं स्मृत्वा ..... उपजायते।
(घ) विद्यायाः ..... अजरं भवति।
(ङ) प्रकृतेः शोभा ..... विद्यते।
(च) यत्र ..... एकनीडं भवति।

Watch me on YouTube

उत्तराणि– (क) तेजोराशय: (ख) किरण:
(ग) उल्लास: (घ) मानम्
(ङ) अनुपमा (च) जगत्

७. अधोलिखितानां मेलनं कुरुत–

'क वर्ग:'	'ख वर्ग:'
(क) भारतीयैकताया:	१. विस्तारकम्
(ख) सत्पथे	२. साधकम्
(ग) त्यागसन्तोषसेवारूपम्	३. दर्शकम्
(घ) ज्ञानपुञ्जप्रभाया:	४. प्रेरणादायकम्
(ङ) विश्वबन्धुत्वस्य	५. व्रतम्

उत्तराणि–

(क) भारतीयैकताया:	२. साधकम्
(ख) सत्पथे	४. प्रेरणादायकम्
(ग) त्यागसन्तोषसेवारूपम्	५. व्रतम्
(घ) ज्ञानपुञ्जप्रभाया:	३. दर्शकम्
(ङ) विश्वबन्धुत्वस्य	१. विस्तारकम्

पठितावबोधनम्

१. अधोलिखितयो: पद्यांशयो: पठित्वा उत्तराणि लिखत–

1. त्यागसन्तोषसेवाव्रतं संस्कृतम्
विश्वकल्याणनिष्ठायुतं संस्कृतम्
ज्ञानविज्ञानसम्मेलनं संस्कृतम्
भुक्तिमुक्तिद्वयोद्वेलनं संस्कृतम्।।४।।

प्रश्ना:–

I. एकपदेन उत्तरत–

(i) विश्वकल्याणनिष्ठायुतं किम्?
(ii) भुक्तिमुक्तिद्वयोद्वेलनं किम्?
(iii) कस्य निष्ठायुतं संस्कृतम् अस्ति?

II. पूर्णवाक्येन उत्तरत–

(i) कयो: सम्मेलनं संस्कृतम्?
(ii) संस्कृतं कीदृशं व्रतम् अस्ति?

III. यथानिर्देशम् उत्तरत–

(i) 'सन्तोष:' इत्यस्य पर्यायशब्दं लिखत–
(क) दया (ख) तोष:
(ग) बुभुक्षा (घ) लोभ:

(ii) 'ज्ञानविज्ञानसम्मेलनं' इति पदस्य विशेष्यपदं किम्?
(क) संस्कृत (ख) संस्कृतम्
(ग) कृतं (घ) संस्कृत:

(iii) 'मुक्ति:' इत्यस्य पदस्य विलोमपदं किम्?
(क) द्वयो: (ख) भुक्ति
(ग) निग्रह: (घ) मुक्ती:

उत्तराणि– I. *(i)* संस्कृतम् *(ii)* संस्कृतम्
(iii) विश्वकल्याणस्य

II. *(i)* ज्ञानविज्ञानसम्मेलनं संस्कृतम्।
(ii) त्यागसन्तोषसेवाव्रतं संस्कृतम् अस्ति।

III. *(i)* (ख) तोष:
(ii) (ख) संस्कृतम्
(iii) (ग) निग्रह:

2. विश्वबन्धुत्वविस्तारकं संस्कृतम्
सर्वभूतैकताकारकं संस्कृतम्
सर्वत: शान्तिसंस्थापकं संस्कृतम्
पञ्चशीलप्रतिष्ठापकं संस्कृतम्।।

प्रश्ना:–

I. एकपदेन उत्तरत–

(i) कस्य प्रतिष्ठापकं संस्कृतम्?
(ii) सर्वत: शान्तिसंस्थापकं किम्?
(iii) संस्कृतं कस्य विस्तारकम्?

II. पूर्णवाक्येन उत्तरत–

(i) संस्कृतं कस्या: संस्थापकम् अस्ति?
(ii) केषाम् एकताकारकं संस्कृतम्?

III. यथानिर्देशम् उत्तरत–

(i) 'विस्तारकं' इत्यस्य पदस्य क: अर्थ:?
(क) प्रसारकं (ख) कारक
(ग) प्रसार: (घ) प्रसारयति

(ii) 'एकता' इति पदस्य विलोमपदं किम्?
(क) प्रमुखता (ख) अनेकता
(ग) विशेषता (घ) सर्वदा

(iii) 'विश्वबन्धुत्वविस्तारकं संस्कृतम्' अत्र विशेष्यपदं किम्?

(क) बन्धुत्व (ख) विश्व
(ग) विस्तारकं (घ) संस्कृतम्

उत्तराणि– **I.** (i) पञ्चशीलस्य (ii) संस्कृतं
(iii) विश्वबन्धुत्वस्य

II. (i) संस्कृतं शान्तेः संस्थापकम् अस्ति।
(ii) सर्वभूतानाम् एकताकारकं संस्कृतम्।

III. (i) (क) प्रसारकं
(ii) (ख) अनेकता
(iii) (घ) संस्कृतम्

२. रेखाङ्कितपदानि आधृत्य प्रश्ननिर्माणं कुरुत।

(क) संस्कृतभाषा भारतीयानाम् ऐक्यं साधयति।
(ख) संस्कृतं जनानां मानसं शोधयति।
(ग) विश्वबन्धुत्वं वर्धयति।
(घ) इहलोके परलोके च संस्कृतेन उत्कर्षः लभ्यते।
(ङ) संस्कृतस्य श्रवणेन जनाः चमत्कारं लभन्ते।
(च) संस्कृतं ज्ञानसमूहस्य प्रभा दर्शयति।

उत्तराणि– (क) संस्कृतभाषा केषाम् ऐक्यं साधयति?
(ख) संस्कृतं केषाम् मानसं शोधयति?
(ग) किं वर्धयति?
(घ) इहलोके परलोके च केन उत्कर्षः लभ्यते?
(ङ) कस्य श्रवणेन जनाः चमत्कारं लभन्ते?
(च) संस्कृतं कस्य प्रभा दर्शयति?

३. मेलनं कुरुत–

'क'	'ख'
(क) भारतीय	१. दर्शकम्
(ख) ज्ञानपुञ्जप्रभा	२. एकतासाधकम्
(ग) सत्पथ	३. सन्दोहदम्
(घ) सर्वदानन्द	४. संस्कारकम्
(ङ) सर्वमस्तिष्क	५. प्रेरणादायकम्

उत्तराणि–

'क'	'ख'
(क) भारतीय	२. एकतासाधकम्
(ख) ज्ञानपुञ्जप्रभा	१. दर्शकम्
(ग) सत्पथ	५. प्रेरणादायकम्
(घ) सर्वदानन्द	३. सन्दोहदम्
(ङ) सर्वमस्तिष्क	४. संस्कारकम्

४. अधोलिखितपद्यांशस्य अन्वयं मञ्जूषातः उचितं पदं चित्वा पूरयत–

1. धर्मकामार्थमोक्षप्रदं संस्कृतम्
ऐहिकामुष्मिकोत्कर्षदं संस्कृतम्
कर्मदं ज्ञानदं भक्तिदं संस्कृतम्
सत्यनिष्ठं शिवं सुन्दरं संस्कृतम्।।

अन्वय– संस्कृतं **(i)** ....., संस्कृतं ऐहिकामुष्मिकोत्कर्षदं **(ii)** ..... कर्मदं ज्ञानदं **(iii)** ..... संस्कृतं सत्यनिष्ठं **(iv)** ..... सुन्दरम् (अस्ति)।

मञ्जूषा– शिवं, संस्कृतं, धर्मकामार्थमोक्षप्रदं, भक्तिदं

उत्तराणि– (i) धर्मकामार्थमोक्षप्रदं (ii) संस्कृतं
(iii) भक्तिदं (iv) शिवं

५. अधोलिखितपद्यांशयोः भावार्थं मञ्जूषातः पदानि चित्वा पूरयत–

(क) भारतीयैक्तासाधकं संस्कृतम्
भारतीयत्वसम्पादकं संस्कृतम्
ज्ञानपुञ्जप्रभादर्शकं संस्कृतम्
सर्वदानन्दसन्दोहदं संस्कृतम्।।

भावार्थः– संस्कृतभाषा भारतीयानाम् **(i)** ..... साधयति, भारतीयत्वं सम्पादयति, ज्ञानसमूहस्य **(ii)** ..... दर्शयति, सर्वदा **(iii)** ..... परम्परां एव **(iv)** .....।

मञ्जूषा– जनयति, प्रभां, ऐक्यं आनन्दस्य

उत्तराणि– (i) ऐक्यं (ii) प्रभां
(iii) आनन्दस्य (iv) जनयति।

(ख) विश्वबन्धुत्वविस्तारकं संस्कृतम्
सर्वभूतैकताकारकं संस्कृतम्
सर्वतः शान्तिसंस्थापकं संस्कृतम्
पञ्चशीलप्रतिष्ठापकं संस्कृतम्।।

भावार्थः– संस्कृतं विश्वबन्धुत्वं **(i)** ....., सर्वेषां प्राणिनाम् अपि **(ii)** ..... बोधयति, सर्वत्र **(iii)** ..... प्रतिष्ठापयति, प्रसिद्धानां **(iv)** ..... शीलानां रीतिं गमयति।

मञ्जूषा– पञ्चानां, शान्तिं, ऐक्यं, वर्धयति

Click Here to Buy Main Book Online

पाठ का मूल विचार

- **मुख्य सूक्ति:** "सुखस्य मूलं धर्मः धर्मस्य मूलम् अर्थः।"
- **अर्थ:** सुख का आधार धर्म, धर्म का आधार अर्थ।
- **परस्पर संबंध:** जीवन, धर्म, अर्थ और सुख अविच्छिन्न।
- **धर्म और अर्थ की भूमिका:** न्यायपूर्वक अर्जित धन धर्म के पालन में सहायक, जो अंततः सुख प्रदान करता है।

जीवन में अर्थ का महत्व

- **मूलभूत आवश्यकताएँ:** अन्न, वस्त्र, आवास, शिक्षा, स्वास्थ्य, सेवा।
- **संतुलित जीवन:** धन के अभाव में जीवन असंतुलित, कष्टमय।
- **पुरुषार्थ:** चतुर्वर्ग में अर्थ का महत्वपूर्ण स्थान।

छात्र जीवन में आर्थिक साक्षरता

- **समस्याएँ:** माता-पिता के धन का अपव्यय, फास्ट फूड पर खर्च, फैशनेबल परिधान पर व्यय।
- **परिणाम:** धन की हानि, स्वास्थ्य की हानि, वित्तीय बोझ।

सुखस्य मूलं धर्मः
धर्मस्य मूलम् अर्थः

बचत और निवेश का महत्व

- **चाणक्य की सूक्ति:** बूँद-बूँद से घड़ा भरता है, वैसे ही संचय से धर्म और धन।
- **दीर्घकालिक लाभ:** छोटे-छोटे संचय बड़े धन में विकसित होते हैं।
- **छात्रों के लिए:** प्रतिदिन थोड़ा-थोड़ा बचत और निवेश।
- **राष्ट्रीय सुरक्षा:** नागरिकों की आर्थिक सुरक्षा देश की समृद्धि में योगदान।

सरकारी बचत एवं निवेश योजनाएँ

- प्रधानमंत्री-जन-धन-योजना
- सुकन्या-समृद्धि-योजना
- सार्वजनिक-भविष्य-निधि (PPF)
- वरिष्ठ-नागरिक-संचय-योजना
- किसान-विकास-पत्रम्
- राष्ट्रीय-संचय-प्रमाणपत्रम् (NSC)
- राष्ट्रिय-पेंशन-योजना (NPS)
- आवृत्तिनिक्षेप: (Recurring Deposit)

भौतिकतावाद और आर्थिक सुदृढ़ता

- **चुनौती:** भौतिकतावाद और अपव्यय आर्थिक स्थिति कमजोर करता है।
- **बुद्धिमान छात्रों के लिए मार्गदर्शन:** धैर्य, धन कमाने के उचित उपाय, आपातकालीन निधि, दीर्घकालीन निवेश।
- **लक्ष्य:** धर्म, अर्थ, काम और सुख के बीच संतुलन।

निष्कर्ष

- **अंतिम शिक्षा:** "क्षणशः कणशश्चैव विद्यामर्थं च साधयेत्। क्षणे नष्टे कुतो विद्या कणे नष्टे कुतो धनम्"॥
- **भावार्थ:** विद्या और धन के संचय में निरंतरता, अनुशासन, समय का सदुपयोग महत्वपूर्ण।

शिक्षा

इस पाठ से हमें यह शिक्षा मिलती है कि जीवन में धन का बहुत महत्वपूर्ण स्थान है, लेकिन उसका सही उपयोग और संतुलन बनाए रखना उससे भी अधिक आवश्यक है। धन को सदैव ईमानदारी और न्यायपूर्ण तरीके से कमाना चाहिए। अनावश्यक और दिखावटी खर्च से बचना चाहिए तथा आवश्यकताओं के अनुसार ही व्यय करना चाहिए। साथ ही, भविष्य की सुरक्षा के लिए धन का नियमित रूप से संचय और निवेश करना भी जरूरी है। छात्र जीवन से ही आर्थिक समझ विकसित करनी चाहिए ताकि अपव्यय से बचा जा सके। इस प्रकार, धर्म और अर्थ के संतुलन से ही जीवन सुखी, सुरक्षित और सफल बनता है।

द्वितीयः पाठः

सुखस्य मूलं धर्मः, धर्मस्य मूलम् अर्थः

(सुख का मूल धर्म है, धर्म का मूल अर्थ है)

पाठ का सार

भारतीय धर्मशास्त्रों में अनेक सूक्तियाँ विद्यमान हैं, जो मानव जीवन के यथार्थ तत्त्व का प्रतिपादन करती हैं। उनमें से एक प्रसिद्ध सूत्र रूप में वाक्य कौटिल्य के अर्थशास्त्र में है–

सुख का मूल धर्म है और धर्म का मूल अर्थ है।

इसका तात्पर्य है कि वास्तविक सुख का आधार धर्म है तथा धर्मपालन का आधार अर्थ है। 'अर्थ' ऐसा कहने पर धन, जो सभी प्रकार की आजीविका तथा व्यवहार का प्रमुख साधन है।

जीवन में धर्म, अर्थ, सुख–इन तीनों का परस्पर सम्बन्ध अविच्छिन्न है जो व्यक्ति न्यायपूर्वक धन का अर्जन करता है, वह धर्म का पालन करने में समर्थ होता है। धर्म के पालन से दीर्घकाल तक सुख भोगता है।

मूलपाठः, शब्दार्थाः, सरलार्थाः, अन्वयाः, भावार्थाः, अभ्यासकार्यं च

1. **सामान्यजीवने अन्नं, वस्त्रम्, आवासः, शिक्षा, स्वास्थ्यसेवा चेत्यादीनां मूलभूतानाम् आवश्यकतानां पूर्तये धनम् आवश्यकम्। पर्याप्तधनस्य अभावात् स्वकर्तव्यपालनं कठिनं भवति। स्वास्थ्यं, शिक्षा, सेवा, दानम् चेत्यादीनि कार्याणि बाधितानि भवन्ति। दैनन्दिनजीवनं च असन्तुलितं भवति। अतः धर्मशास्त्रे चतुर्वर्गेषु धर्मार्थकाममोक्षेषु अर्थः अन्यतमः स्तम्भः इति गण्यते। उक्तं गरुडपुराणे– "ब्राह्मे मुहूर्ते चोत्थाय धर्ममर्थं च चिन्तयेत्।"**

अर्थात् दिनस्य आरम्भे धर्मार्थयोः चिन्तनम् आवश्यकम्। *(पृष्ठ 9-10)*

शब्दार्थाः– आवास – घर। **पूर्तये** – पूर्ति के लिए। **बाधितानि** – बाधित। **दैनन्दिन** – दैनिक। **अन्यतम** – अनेक में से एक। **गण्यते** – गिना जाता है। **उक्तम्** – कहा है। **उत्थाय** – उठकर। **चिन्तयेत्** – चिन्तन करें।

सरलार्थः– सामान्य जीवन में अन्न, वस्त्र, घर, शिक्षा और स्वास्थ्य सेवा इत्यादि मूलभूत आवश्कताओं की पूर्ति के लिए धन आवश्यक है। पर्याप्त धन के अभाव से अपने कर्त्तव्य का पालन (भी) कठिन हो जाता है। स्वास्थ्य, शिक्षा, सेवा और दान इत्यादि कार्य बाधित हो जाते हैं। दैनिक जीवन असन्तुलित होता है। इसलिए धर्मशास्त्र में धर्मार्थकाममोक्ष (इन्द्र) चतुर्वर्गों में अर्थ (अनेक में) एक स्तम्भ गिना जाता है। गरुड पुराण में कहा गया है–

ब्राह्म मुहूर्त में उठकर धर्म और अर्थ का चिन्तन करें अर्थात् दिन के आरम्भ में धर्म और अर्थ का चिन्तन आवश्यक है।

2. **स्वस्थः आर्थिकव्यवहारः त्रिविधः भवति– न्यायपूर्णम् अर्थोपार्जनम्–सन्मार्गेण एव धनार्जनं करणीयम् इति। उक्तं भगवता मनुना– सर्वेषामेव शौचानामर्थशौचं परं स्मृतम्। योऽर्थे शुचिर्हि सः शुचिर्न मृद्वारिशुचिः शुचिः॥ अस्य आशयः यत् अनैतिकः आर्थिकव्यवहारः कदापि न करणीयः। "मा गृधः कस्यस्विद्धनम्" इति उपनिषदः वाक्यं सततं मनसि निधाय स्वकौशलेन विद्यया च धनम् उपार्जनीयम्।** *(पृष्ठ 10)*

शब्दार्थाः– स्वस्थ – हृष्ट-पुष्ट। **आर्थिक** – अर्थ का। **त्रिविध** – तीन प्रकार का। **उपार्जनम्** – अर्जन। **शुचि** – पवित्र। **करणीयम्** – करना चाहिए। **शौचानाम्** – पवित्रता का। **शौचम्** – पवित्रता। **स्मृतम्** – कहा गया है। **मृदवारि** – मिट्टी, जल।

Click Here for Regional Languages

अन्वयः– सर्वेषाम् एव शौचानाम् अर्थशौचं परं स्मृतम्। हि यः अर्थे शुचिः सः शाचः मृदवारिशुचिः न शुचिः (कथ्यते)।

सरलार्थः– पवित्र अर्थ सम्बन्धी व्यवहार तीन प्रकार का होता है–

न्यायपूर्ण अर्थ-अर्जन

सन्मार्ग के द्वारा ही धन का अर्जन करना चाहिए। भगवान् मनु ने कहा है–

सभी प्रकार की पवित्रता में धन की पवित्रता ही प्रमुख है। जो अर्थ के सम्बन्ध में पवित्र है, वह ही पवित्र है। मिट्टी और जल के द्वारा (की गई) शुद्धता शुद्धता नहीं कही जाती है।

इसका तात्पर्य है कि अनैतिक धन सम्बन्धी व्यवहार कभी भी नहीं करना चाहिए। किसी के धन का लालच मत करो। इस उपनिषद के वाक्य को निरन्तर मन में टिकाकर अपने कौशल और ज्ञान से धन का अर्जन करना चाहिए।

3. औचित्यपूर्णः व्ययः–आवश्यकतानुसारं व्ययः करणीय। येन व्ययेन स्वास्थ्यलाभः विद्यार्जनम् आत्मसुरक्षा वा भवेत्, सः व्ययः अवश्यं करणीयः। आडम्बरपूर्णः प्रदर्शनकारी व्ययः अथवा विलासव्यसनाय व्ययः अपव्ययः भवति। अपव्ययः वर्जनीयः, अतः प्रत्येकं व्ययस्य लेखः स्थापनीयः। अन्ते च तेषां परिशीलनं करणीयम्। *(पृष्ठ 10)*

शब्दार्थाः– औचित्यपूर्ण – उचित। **करणीयः –** करना चाहिए। **आत्म –** अपनी। **आडम्बर –** दिखावा। **व्यसन –** बुरी आदत। **अपव्यय –** फिजूल खर्चा। **वर्जनीय –** टालना चाहिए। **स्थापनीय –** करना चाहिए। **परिशीलनम् –** समीक्षा।

सरलार्थः– उचित व्यय–मनुष्य को आवश्यकता के अनुसार व्यय करना चाहिए। जिस व्यय के द्वारा स्वास्थ्य लाभ, विद्या का अर्जन या आत्मसुरक्षा हो, वह व्यय अवश्य करना चाहिए। दिखावा से भरा हुआ प्रदर्शनकारी व्यय अथवा विलास व व्यसन (मद्यपान आदि) के लिए (किया गया) व्यय अपव्यय होता है। अपव्यय नहीं करना चाहिए। इसलिए प्रत्येक व्यय का लेख रखना चाहिए। अन्त में उनकी समीक्षा करनी चाहिए।

4. भविष्यदृष्ट्या सञ्चयः–उपार्जितधनस्य कश्चन भागः भविष्यसुरक्षायै सञ्चयनीयः। सञ्चयस्य अभ्यासेन जनः स्वावलम्बी भवति। स्वावलम्बनं स्वाभिमानस्य मूलं वर्तते। संकटकालेऽपि स्वाभिमानिजनः अन्यजनस्य आर्थिकसहायतां नापेक्षते। *(पृष्ठ 10)*

शब्दार्थाः– सञ्चय – एकत्र करना। **कश्चन –** कोई। **सञ्चयनीय –** सञ्चय करना चाहिए। **वर्तते –** है। **न –** नहीं। **अपेक्षते –** अपेक्षित होता है।

सरलार्थः– भविष्य की दृष्टि से संचय–

अर्जित धन का कोई (एक) भाग भविष्य की सुरक्षा के लिए संचित करना चाहिए। संचय के अभ्यास से व्यक्ति स्वावलम्बी होता है। स्वावलम्बन स्वाभिमान का मूल है। संकट के समय पर भी स्वाभिमानी व्यक्ति अन्य व्यक्ति की (ओर से) आर्थिक सहायता की अपेक्षा नहीं रखता है।

5. छात्रजीवने आर्थिकसाक्षरता

अनेकदा छात्राः मातापितृभ्यां कष्टार्जितधनस्य तुच्छकारणैः अपव्ययं कुर्वन्ति। जिह्वालालसापूर्त्यर्थं त्वरिताहारः, शीतपेयं, पुटीकृतभोजनं, तथैव व्यसनपदार्थानां सेवनं, प्रदर्शनकारिपरिधानं विलासितापूर्णम् आचरणं चेत्यादि यत्र प्रभूतः अपव्ययः भवति। एतैः न केवलं धनहानिः, स्वास्थ्यहानिरपि जायते। स्वास्थ्यहानिकारणात् पुनः धनव्ययो वर्धते। *(पृष्ठ 11)*

शब्दार्थाः– अनेकदा – अनेक बार। **कष्टार्जित –** कष्टपूर्वक कमाया गया। **तुच्छ –** हीन। **जिह्वा –** जीभ। **लालसा –** लालच। **त्वरिताहारः –** Fast Food। **पेयम् –** Drink। **पुटीकृत –** डिब्बा बन्द, Packed। **परिधान –** वेशभूषा। **प्रभूत –** अत्यधिक। **एतैः –** इन से। **जायते –** उत्पन्न होता है। **वर्धते –** बढ़ता है। **पूर्त्यर्थम् –** पूर्ति के लिए।

सरलार्थः– छात्र जीवन में आर्थिक साक्षरता–अनेक बार छात्र माता-पिता के द्वारा कष्टपूर्वक कमाए गए धन का तुच्छ कारणों से अपव्यय करते हैं। जीभ के लालच की पूर्ति के लिए फास्ट फूड, शीतपेय (Cold Drink), डिब्बा बन्द भोजन तथा व्यसन पदार्थों का सेवन, दिखावा से पूर्ण वेशभूषा, विलासिता से भरा

Click Here to Buy Main Book Online

आचरण इत्यादि, जहाँ अत्यधिक अपव्यय होता है। इनके द्वारा न केवल धन हानि, स्वास्थ्य हानि भी होती है, पुनः स्वास्थ्य हानि के कारण से धन का व्यय भी बढ़ता है।

6. **अर्जितस्य सञ्चयः सञ्चितस्य च निवेशः चाणक्यनीतौ उक्तम्–**

जलबिन्दुनिपातेन क्रमशः पूर्यते घटः।
स क्रमः सर्वविद्यानां धर्मस्य च धनस्य च॥
लघु-लघुः सञ्चयोपि कालान्तरे महत्सम्पत्तिरूपेण वर्धते।
यदि छात्राः प्रतिदिनम् अल्पधनस्यापि सञ्चयं कुर्वन्ति,
तस्य उचितनिवेशं च कुर्वन्ति तर्हि तेषां भविष्यं सुरक्षितं
भवेत्। भारतदेशे धनसञ्चयस्य सुरक्षितनिवेशस्य च कृते
बहुविधाः मार्गाः सन्ति। तेषु प्रधानमन्त्री-जनधनयोजना,
सुकन्या-समृद्धि-योजना, सार्वजनिक-भविष्य-निधिः
वरिष्ठ-नागरिक-संचय-योजना,
किसान-विकास-पत्रं, राष्ट्रिय-संचय-
प्रमाणपत्रं, राष्ट्रिय-पेंशन-योजना, *(पृष्ठ 11)*

शब्दार्थाः– उक्तम् – कहा गया। **निपात** – गिरना। **पूर्यते** – पूरा होता है। **घट** – घड़ा। **लघु** – छोटा। **कालान्तरे** – समय पाकर। **महत्** – अत्यधिक। **अल्प** – थोड़ा। **तर्हि** – अवश्य ही। **तेषाम्** – उनका। **कृते** – के लिए। **बहुविधा** – अनेक प्रकार के।

अन्वयः– घटः जल बिन्दु निपातेन, क्रमशः पूर्यते। सर्वविद्यानां धर्मस्य च धनस्य च स (एव) क्रमः।

सरलार्थः– अर्जित धन का सञ्चय और सञ्चित का निवेश– चाणक्यनीति में कहा है–

घड़ा क्रमशः जल की बूँद (बूँद) गिरने से भर जाता है। सभी विद्याओं, धर्म और धन का यह ही क्रम (= नियम) है।

छोटी-छोटी बचत भी समय पाकर बड़ी सम्पत्ति के रूप में वृद्धि को प्राप्त हो जाती है। यदि छात्र प्रतिदिन थोड़े (थोड़े) का भी सञ्चय करते हैं और उसका उचित निवेश करते हैं तो अवश्य ही उनका भविष्य सुरक्षित होगा। भारत देश में धन के सञ्चय के और सुरक्षित निवेश के लिए अनेक मार्ग हैं, उनमें प्रधानमंत्री जन धन योजना, सुकन्या समृद्धि योजना, सार्वजनिक भविष्य निधि, वरिष्ठ नागरिक सञ्चय योजना, किसान विकासपत्र, राष्ट्रीय सञ्चय प्रमाणपत्र, राष्ट्रीय पेंशन योजना, नियत निक्षेप, आवर्ति निक्षेप आदि प्रमुख हैं।

7. **नियतनिक्षेपः, आवृत्तिनिक्षेपः चेत्याद्याः प्रमुखाः सन्ति। एतासां सर्वकारीययोजनानां विषये सूचनाः लब्धुं लाभमवाप्तुं च समीपस्थवित्तागाराः पत्रालयाः वा गन्तव्याः तत्सम्बद्धाः अधिकारिणः चः प्रष्टव्याः। एतासु योजनासु न केवलं कष्टार्जितधनस्य सुरक्षा भवति अपि तु चक्रवृद्ध्यंशेन सह तद्धनं सततं वर्धमानं भवति।** *(पृष्ठ 11-12)*

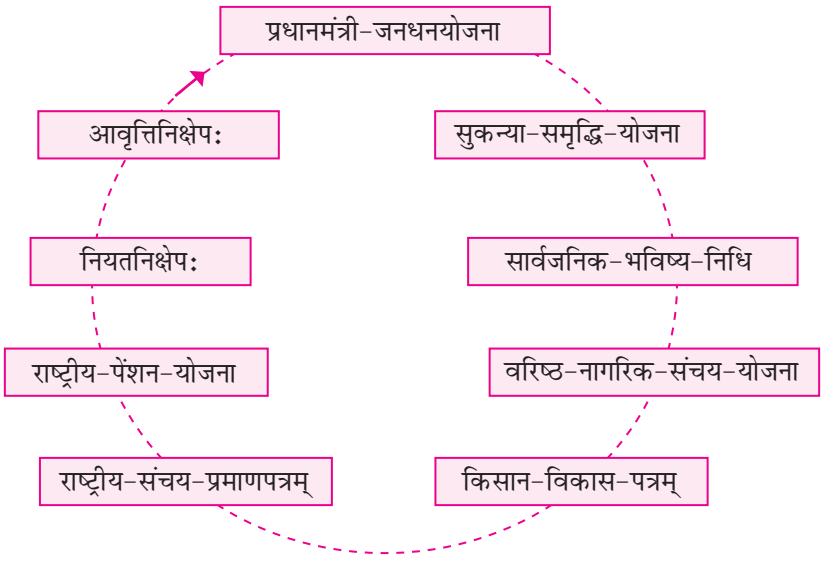

Watch me on YouTube

शब्दार्थाः – **एतासाम् –** इनका। **सर्वकारीय –** सरकारी। **लब्धुम् –** प्राप्त करने के लिए। **अवाप्तुम् –** प्राप्त करने के लिए। **समीपस्थ –** निकटवर्ती। **वित्तागारा –** बैंक। **पत्रालयाः –** डाकघर। **प्रष्टव्याः –** पूछना चाहिए। **सततम् –** निरन्तर।

सरलार्थः – इन सरकारी योजनाओं के विषय में सूचना पाने के लिए तथा लाभ प्राप्त करने के लिए निकटवर्ती बैंकों या डाकघर जाना चाहिए और उन से सम्बन्धित अधिकारियों से पूछना चाहिए। इन योजनाओं में न केवल कष्टपूर्वक कमाए गए धन की सुरक्षा होती है, अपितु चक्रवृद्धि ब्याज़ के साथ वह धन भी निरन्तर बढ़ता है।

8. भौतिकतावादियुगस्य आकर्षणेन यूनामपव्ययः अधिको भवति येन कारणेन अस्माकम् आर्थिकस्थितिः विपन्ना भवति। किन्तु अर्थविषयकसचेतनता अस्मान् अभावात् उद्धृत्य आर्थिकसम्पन्नतां प्रति नयति। अतः बुद्धिमतां छात्राणां ध्येयं स्यात्–धनस्य उचितोपार्जनम्, व्ययस्य मर्यादा, आपातकालीननिधिसञ्चयः, दीर्घकालीननिवेशश्च। यः एतेषाम् अनुशासनेन पालनं करोति, स एव यथार्थतः धनस्य धर्मस्य च सन्तोलनं स्थापयितुं शक्नोति। यः विद्यार्थी अद्य अर्थविषये जागरूकोऽस्ति, सः भविष्ये उत्तरदायी नागरिको भवति। धर्मः, अर्थः, सुखम् चेत्येतेषां सन्तोलनम् एव यथार्थजीवनस्य लक्षणम्। अत एवोक्तम्–

क्षणशः कणशश्चैव विद्यामर्थं च साधयेत्।
क्षणे नष्टे कुतो विद्या कणे नष्टे कुतो धनम्॥

(पृष्ठ 12)

शब्दार्थाः – **यूनाम् –** युवाओं का। **विपन्ना –** क्षीण। **उद्धृत्य –** उद्धार करके। **यथार्थतः –** वस्तुतः। **क्षणशः –** पल पल। **कणशः –** कण कण। **साधयेत् –** सिद्ध करें। **नष्टे –** नष्ट होने पर।

अन्वयः – क्षणशः कणशः च एव विद्यां। अर्थं च साधयेत्। क्षणेनष्टे विद्या कुतः, कणे नष्टे धनं कुतः?

सरलार्थः – भौतिकवादी युग के आकर्षण से युवाओं का अपव्यय अधिक होता है, जिस कारण हमारी आर्थिक स्थिति क्षीण होती है। किन्तु धन के विषय में जागरूकता हमें अभाव से उद्धार करके आर्थिक-सम्पन्नता के प्रति ले जाती है। इसलिए बुद्धिमान् छात्रों का ध्येय होगा–धन का उचित अर्जन, व्यय की मर्यादा, आपात्कालीन निधि संचय तथा दीर्घकालीन निवेश। जो इनका अनुशासनपूर्वक पालन करता है, वह ही वस्तुतः धन का तथा धर्म का सन्तुलन स्थापित कर सकता है। जो छात्र आज धन के विषय में जागरूक हैं, वह भविष्य में उत्तरदायी नागरिक होता है। धर्म, अर्थ, सुख–इनका सन्तुलन ही यथार्थजीवन का लक्षण है। इसलिए कहा गया है–

सरलार्थः – पल पल कण कण विद्या और धन को सिद्ध करें। पल के (अर्थात् समय के) नष्ट होने पर विद्या कहाँ और कण के नष्ट होने पर धन कहाँ?

शारदा–अभ्यासाद् जायते सिद्धिः

(पृष्ठ 18-21)

१. एकपदेन उत्तरं लिखत–

(क) वास्तविकसुखस्य आधार कः?
.....

(ख) कस्य अभावात् स्वकर्तव्यपालनं कठिनं भवति?
.....

(ग) स्वस्थः आर्थिकव्यवहारः कतिविधः भवति?
.....

(घ) कीदृशः आर्थिकव्यवहारः कदापि न करणीयः?
.....

(ङ) स्वावलम्बनं कस्य मूलं वर्तते?
.....

(च) जलबिन्दुनिपातेन क्रमशः किं पूर्यते?
.....

उत्तराणि– (क) धर्मः, (ख) धनस्य, (ग) त्रिविधः, (घ) अस्वस्थः, (ङ) स्वाभिमानस्य, (च) घटः

२. पूर्णवाक्येन उत्तरं लिखत–

(क) "सुखस्य मूलं धर्मः, धर्मस्य मूलम् अर्थः" इतीदं प्रसिद्धं वाक्यं कस्मिन् ग्रन्थे प्राप्यते?
.....

(ख) सामान्यजीवने कासाम् आवश्यकतानां पूर्त्यर्थं धनम् आवश्यकम्?
.....

(ग) ब्राह्मे मुहूर्ते कयोः चिन्तनम् आवश्यकम्?
.....

(घ) जनः केन स्वावलम्बी भवति?
.....

(ङ) लघुलघुसञ्चयः अपि कालान्तरे केन रूपेण वर्धते?
.....

उत्तराणि– (क) इदं वाक्यं कौटिल्यस्य अर्थशास्त्रे प्राप्यते।
(ख) सामान्यजीवने अन्नं वस्त्रम् आवासः, शिक्षा इत्यादीनाम् आवश्यकतानां पूर्त्यर्थं धनम् आवश्यकम्।
(ग) ब्राह्मे मुहूर्ते धर्माऽर्थयोः चिन्तनम् आवश्यकम्।
(घ) जनः सञ्चयस्य अभ्यासेन स्वावलम्बी भवति।
(ङ) लघुलघुसञ्चयः अपि कालान्तरे चक्रवृद्धयंशेन कालान्तरे वर्धते।

३. वाक्येन सह ग्रन्थस्य सम्मेलनं कुरुत–

'क वर्गः'	'ख वर्गः'
(क) जलबिन्दुनिपातेन क्रमशः पूर्यते घटः।	१. गरुडपुराणम्
(ख) ब्राह्मे मुहूर्ते चोत्थाय धर्ममर्थं च चिन्तयेत्।	२. मनुस्मृतिः
(ग) सर्वेषामेव शौचानामर्थशौचं परं स्मृतम्।	३. अर्थशास्त्रम्
(घ) सुखस्य मूलं धर्मः, धर्मस्य मूलम् अर्थः।	४. चाणक्यनीतिः

उत्तराणि–

(क) जलबिन्दुनिपातेन क्रमशः पूर्यते घटः। ४. चाणक्यनीतिः
(ख) ब्राह्मे मुहूर्ते चोत्थाय धर्ममर्थं च चिन्तयेत्। १. गरुडपुराणम्
(ग) सर्वेषामेव शौचानामर्थशौचं परं स्मृतम्। २. मनुस्मृतिः
(घ) सुखस्य मूलं धर्मः, धर्मस्य मूलम् अर्थः। ३. अर्थशास्त्रम्

४. रेखाङ्कितपदमाधृत्य प्रश्ननिर्माणं कुरुत–

(क) सुखस्य मूलं धर्मः।
.....

(ख) दिनस्य आरम्भे धर्मार्थयोः चिन्तनम् आवश्यकम्।
.....

(ग) सन्मार्गेण एव धनार्जनं करणीयम्।
.....

(घ) अनैतिकः आर्थिकव्यवहारः कदापि न करणीयः।
.....

(ङ) संकटकाले स्वाभिमानिजनः अन्यजनस्य आर्थिकसहायतां नापेक्षते।
.....

उत्तराणि– (क) कस्य (ख) कयोः (ग) किम्
(घ) कीदृशः (ङ) कः

५. उचितपदैः रिक्तस्थानानि पूरयत–

	विद्	विद्यते	विद्येते	विद्यन्ते
(क)	लभ्	.....	लभेते	लभन्ते
(ख)	अपेक्ष	अपेक्षते	.....	अपेक्षन्ते
(ग)	वर्ध्	.....	वर्धेते	.....
(घ)	सेव्	.....	.....	सेवन्ते
(ङ)	मोद्	मोदते	.....	.....

उत्तराणि– (क) लभते (ख) अपेक्षेते
(ग) वर्धते, वर्धन्ते (घ) सेवते, सेवेत
(ङ) मोदेते, मोदन्ते

६. अधोलिखितानां प्रश्नानां शुद्धं विकल्पं चिनुत–

(क) "सुखस्य मूलं धर्मः, धर्मस्य मूलम् अर्थः" इत्यस्य मुख्य आशयः कः अस्ति?
१. सुखस्य आधारः केवलम् अर्थः एव।
२. धर्मस्य आधारः केवलं सुखम् एव।
३. धर्मस्य आधारः अर्थः, सुखस्य आधारः धर्मः।
४. सुखं, धर्मः, अर्थः–एतेषां मध्ये सम्बन्धः नास्ति।

(ख) गरुडपुराणे किम् उपदिष्टम् अस्ति?
१. रात्रौ धनस्य चिन्तनं करणीयम्।
२. प्रभाते धर्मार्थयोः चिन्तनं करणीयम्।
३. केवलं धर्मचिन्तनं करणीयम्।
४. केवलम् अर्थचिन्तनं करणीयम्।

(ग) "सर्वषामेव शौचानामर्थशौचं परं स्मृतम्" इत्यस्य तात्पर्यं किम्?
१. जलशौचमेव श्रेष्ठम्।
२. मृद्वारिशौचमेव श्रेष्ठम्।
३. अर्थशौचं सर्वोपरि, अन्यविधशौचेभ्यः श्रेयः।
४. शौचस्य आवश्यकता नास्ति।

(घ) छात्रैः क्रियमाणः अपव्ययः कः?
१. स्वास्थ्यलाभाय व्ययः
२. विद्यार्जनाय व्ययः।
३. आडम्बरयुक्तः प्रदर्शनात्मकः व्ययः।
४. आत्मसुरक्षायै व्ययः।

(ङ) "जलबिन्दुनिपातेन क्रमशः पूर्यते घटः" इति वाक्यं कः अवदत्?
१. बृहस्पतिः २. चाणक्यः
३. मनुः ४. याज्ञवल्क्यः

उत्तराणि– (क) ३. धर्मस्य आधारः अर्थः, सुखस्य आधारः धर्मः।
(ख) २. प्रभाते धर्मार्थयोः चिन्तनं करणीयम्।
(ग) ३. अर्थशौचं सर्वोपरि, अन्यविधशौचेभ्यः श्रेयः।
(घ) ३. आडम्बरयुक्तः प्रदर्शनात्मकः व्ययः।
(ङ) २. चाणक्यः

पठितावबोधनम्

१. अधोलिखितं गद्यांशं पठित्वा प्रश्नानाम् उत्तराणि लिखत–

1. सामान्यजीवने अन्नं वस्त्रम्, आवासः, शिक्षा, स्वास्थ्यसेवा चेत्यादीनां मूलभूतानाम् आवश्यकतानां पूर्तये धनम् आवश्यकम्। पर्याप्तधनस्य अभावात् स्वकर्तव्यपालनं कठिनं भवति। स्वास्थ्यं, शिक्षा, सेवा, दानम् चेत्यादीनि कार्याणि बाधितानि भवन्ति। दैनन्दिनजीवनं च असन्तुलितं भवति। अतः धर्मशास्त्रे चतुर्वर्गेषु धर्मार्थकाममोक्षेषु अर्थः अन्यतमः स्तम्भः इति गणयते।

प्रश्नाः–

I. एकपदेन उत्तरत–

(क) सामान्यजीवने मूलभूतानाम् आवश्यकतानां यूर्तये किम् आवश्यकम्?
(ख) कस्य अभावात् कर्त्तव्य-पालनं कठिनं भवति?
(ग) कानि कार्याणि बाधितानि भवन्ति?
(घ) किम् असन्तुलितं भवति?

II. पूर्णवाक्येन उत्तरत–

(क) पर्याप्तधनस्य अभावात् किं कठिनं भवति?
(ख) चतुर्वर्गेषु धर्मार्थ काममोक्षेषु कः अन्यतमः स्तम्भः?

III. यथानिर्देशम् उत्तरत–

(i) 'अन्यतमः स्तम्भः' अत्र विशेषणपदं किम्?
(क) अन्यतमः (ख) स्तम्भः
(ग) अन्य (घ) तमः

(ii) 'कर्त्तव्यपालनं कठिनं भवति'-अत्र क्रियापदं किम्?
(क) कर्त्तव्य (ख) भवति
(ग) पालनम् (घ) कठिनम्

(iii) 'कठिनम्' इत्यस्य विलोमशब्दं लिखत।
(क) सुगमम् (ख) सुन्दरम्
(ग) दुस्तरम् (घ) मनोहरम्

उत्तराणि– I. (क) धेनम्
(ख) धनस्य
(ग) स्वास्थ्यं शिक्षा इत्यादीनि
(घ) दैनन्दिनजीवनम्।

II. (क) सर्वतः संस्कृतं शान्तेः संस्थापकम् अस्ति।
(ख) संस्कृतं त्याग सन्तोष सेवा व्रतम् अस्ति।

III. (i) (क) अन्यतमः (ii) (ख) भवति
(iii) (क) सुगमम्

२. अधोलिखितं श्लोकं पठित्वा उत्तराणि लिखत–

2. जलबिन्दुनिपातेन क्रमशः पूर्यते घटः।
स: क्रमः सर्वविद्यानां धर्मस्य धनस्य च।।

I. एकपदेन उत्तरत–

(i) जलबिन्दुनिपातेन किं पूर्यते?
(ii) घटः केन पूर्यते?
(iii) सः क्रमः कस्य अस्ति?

II. पूर्णवाक्येन उत्तरत–

(i) कस्य निपातेन घटः पूर्यते?
(ii) धर्मस्य क्रमः क?

III. यथानिर्देशम् उत्तरत–

(i) 'घटः पूर्यते'–अत्र कर्तृपदं किम्?
(क) पूर्यते (ख) घटः
(ग) घट (घ) पूर्य

(ii) 'उत्थानेन' इत्यस्य पदस्य विपरीतार्थकं पद किम्?
(क) धर्मयोः (ख) पूर्यते
(ग) क्रमः (घ) निपातेन

(iii) 'जलं' इत्यस्य पर्यायशब्दं लिखत–
(क) वारि (ख) पुष्पम्
(ग) शीतलम् (घ) पत्रम्

उत्तराणि– I. (i) घटः
(ii) जलबिन्दुनिपातेन
(iii) धर्मस्य धनस्य च।

II. (i) जलबिन्दूनां निपातेन घटः पूर्यते।
(ii) धर्मस्य धनस्य सः क्रमः।

III. (i) (ख) घटः
(ii) (घ) निपातेन
(iii) (क) वारि

३. रेखाङ्तपदानि आधृत्य प्रश्ननिर्माणं कुरुत–

(क) धनस्य अभावात् कर्तव्यपालनं कठिनं भवति।
(ख) धर्मार्थकाममोक्षेषु अर्थः अन्यतमः स्तम्भः।
(ग) शौचानाम् अर्थशौचं परं स्मृतम्।

Click Here to Buy Main Book Online

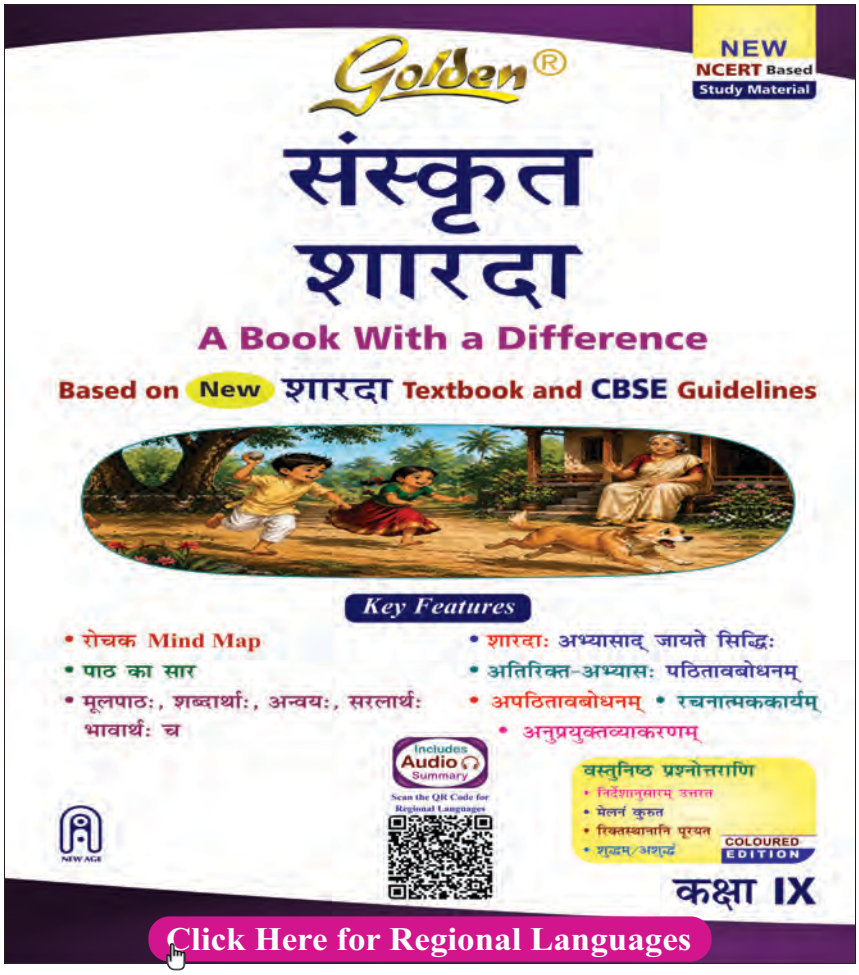

ISBN: 978-93-6074-593-6 | Publication Year: 2027 | Edition: New
Pages: 500 | MRP: ₹ 475.00 | Paperback

Click Here to Buy the Book Online

Salient Features

- रोचक Mind Map
- पाठ का सार
- मूलपाठः, शब्दार्थाः, अन्वयः, सरलार्थः भावार्थः च
- शारदाः अभ्यासाद् जायते सिद्धिः
- अतिरिक्त-अभ्यासः पठितावबोधनम्
- अपठितावबोधनम् • रचनात्मककार्यम्
- अनुप्रयुक्तव्याकरणम्

वस्तुनिष्ठ प्रश्नोत्तराणि

• निर्देशानुसारम् उत्तरत • मेलनं कुरुत • रिक्तस्थानानि पूरयत • शुद्धम्/अशुद्धं

Watch me on YouTube

Committed to Educate the Nation
NEW AGE
Publishing Globally
IN INDIA

NEW AGE INTERNATIONAL (P) LIMITED, PUBLISHERS
LONDON • NEW DELHI
New Delhi • Bengaluru • Bhopal • Chennai • Cochin • Guwahati • Hyderabad • Kolkata • Lucknow • Mumbai • Patna
9315905300 9315905288 9315905334 9315905309 9315905289 9315905296 9315905326 9315905319 9315905295 9315905282 9315905339
Visit us at www.newagegolden.com

A WORD OF WISDOM YOU SHOULD HEED

Golden® *BOOKS YOU SHOULD READ*

ATTENTION STUDENTS!

IF YOU WANT A BRILLIANT SUCCESS,

BE WISE, DON'T BE IN A MESS.

OTHER BOOKS YOU MAY SEE OR TRY,

BUT THE Golden® BOOKS YOU MUST BUY.

Golden® BOOKS

FOR CLASSES FROM I TO XII

A WARRANTY FOR GOLDEN FUTURE

- Golden® **books contain all that is required in the Examinations.**
- Golden® **books are written in sweet, simple and lucid language.**
- Golden® **books contain all the questions set in the Previous CBSE Examinations (up-to-date and fully solved).**
- Golden® **books contain the Expected Questions likely to be set in the Examinations.**
- Golden® **books are a boon for the weak, the mediocre and intelligent students alike.**

TO CROWN ALL

Golden® **books suit all the pockets and serve the triple purpose of Textbooks, Help Books and Sample Papers---- *All in One.***

CHOOSE THE BEST---AND LEAVE THE REST

NEW AGE INTERNATIONAL (P) LIMITED, PUBLISHERS

7/30 A, Daryaganj, New Delhi-110 002 (INDIA)

Tel.: 011-23253771, 23253472 • Fax: +91-11-43551305

Visit us at www.newagegolden.com

(CIN: U74899DL1966PTC004618)

Click Here to Buy Main Book Online

Golden®

NCERT BASED BOOKS

is also on

SOCIAL MEDIA